उत्तुंग शिखर पर गगन चूमते ये स्टेशन सुंदर

दिनेश चमोला 'शैलेश'

संप्रति 7172 स्टेशनों से, भारतीय रेल है सकल विश्व में ख्यात।
समुद्र तल से कुछ तीन सौ मीटर ऊंचे, कुछ दो हज़ार तक हैं विख्यात।
पंच प्रकार की प्रणाली प्रचालन में
भारतीय रेल की अपनी खास
सर्वाधिक ऊंचे रेलवे स्टेशन विश्व में
रच नया रिकॉर्ड, लेते उच्छवास
स्वतंत्रता पूर्व एम.एस.एल. का केंद्र करांची
किंतु बाद चेन्नई बना आधार
किया चमत्कृत सकल विश्व को
रेल क्षेत्र में, दे नव वैज्ञानिक नवाचार
जून 1879 में शुभारंभ हो चली, सर्वाधिक पुरातन (पुरानी) रेल।
न्यू जलपाईगुड़ी-सिलिगुड़ी दार्जिलिंग, दो फुट गेजी थी यह पर्वतीय रेल।
78 किलोमीटर लंबी यह लाइन
रचती अभिनव रिकॉर्ड सुपरफाइन
सिलिगुड़ी जंक्शन 119.335 मीटर है ऊंचा
लेकिन दार्जिलिंग स्टेशन 2076.298 मी. तक पहुंचा
नंबर दो पर 46 किलोमीटर है लंबी
मेट्टूपालयम-उदगमंडलम, चलती बन अवलंबी
तृतीय 96 किमी. लंबी कालका शिमला रेलवे
लगती नागिन सी, स्टेशन गोया हो रोप वे

समतल से पर्वत श्रृंग-श्रृंग को, शब्दायित करती, पर्वतीय शांति।
रच अभिनव अभिलेख जगत में, शैल-शिखरों तक पहुंची रेलक्रांति।
नेराल-माथेरान हो या पाठकोट जोगिंदर नगर रेलवे
जम्मू उधमपुर-श्रीनगर बारामूला का सर्पिल रेलवे
ये सब बन अनुषंगी परिवहन के, रच नव
इतिहास, सुगमता देते जग को, जन-जन को ये
असंभव को भी संभव कर दिखलाया रेलक्रांति ने
दुर्गम क्षेत्रों को सुगम बनाया रेल क्रांति ने
एक ओर, एर्नाकुलम (1.22 मी.) रामेश्वरम् (2.74)
कम ऊंचाई वाले स्टेशन
दूसरी ओर ऊंचाई का ध्वज लहराता
स्वयं दार्जिलिंग का सर्वोच्च स्टेशन
एक से दो हज़ार मीटर ऊंचाई वाले, स्टेशन भारत में लगभग पचास।
ये दर्शनीय, पर्यटन स्थल भी सौंदर्य समेटे, अद्भुत व खास।
ये समतल के दुर्ग, पोर्ट हैं समुद्री तट के
शैल-शिखर के ताज, आस्था यायावरी के पट ये
आज विश्व आकर्षित इन सौंदर्य समेटे
प्रकृति मंदिरों से ऊंचे रेलवे स्टेशनों से
हैं भारत की शान, अनूठे ये भवन सुंदरतम
उत्तुंग शिखर पर गगन चूमते ये स्टेशन सुंदर

संपर्क सूत्र :
डॉ. दिनेश चमोला, अभिव्यक्ति, 167, गढ़ विहार, देहरादून 248 005 (उत्तराखण्ड)
[मो. : 01352660414; ई-मेल : chamoladc@yahoo.com]

चाँद की अभिलाषा

उन महामानवों को देता हूँ मैं, लाख-लाख बधाई,
जिन्होंने मानव के पदचिन्हों को चाँद तक दी है ऊँचाई।
जिनके कठिन परिश्रम से कई अनसुलझे राज खुलें हैं,
चाँद सरीखे पिण्डों पर भी पानी के साक्ष्य मिले हैं।
जिनके कठिन परिश्रम से और हैं कितने इतिहास रचने,
चाँद पर घर बनाने के भी अभी सच करने हैं सपने।
पर इसमें कोई संदेह नहीं मानव इतिहास विजय अभियानों से रचा है,
मानव कल फैलायेगा साम्राज्य चाँद पर यह विश्वास एकदम सच्चा है।
पर उभर कर आ रहें है कई सवाल मानस पटल पर,
क्या होगा जब मानव का अधिकार हो जायेगा चाँद सतह पर?
क्या फिर से एक नया उपनिवेशवाद युग शुरू हो जायेगा,
क्या चाँद पर अपने आधिपत्य को लेकर फिर से हर देश टकरायेगा?
क्या होगा इस जंग का परिणाम?
शक्ति मद में चूर इन देशों को कौन समझायेगा?
हाथ जोड़कर करूँगा प्रार्थना, मैं उन महामानवों से,
यही अभिलाषा है चाँद की भी धरती वालों से।
प्राकृति प्रदत्त इस चीज पर न एक अधिकार जमाएँ,
बल्कि मैत्री भरा हाथ बढ़ाकर हर देश को यहाँ घुमाएँ।
प्रयोग न करे कभी इस सरज़मी का हथियारों को होड़ में,
कितना अच्छा होगा यदि इस्तेमाल हो मानवता के सहयोग में।
धरती की तरह मेरे भी मूल स्वरूप को न मिल दें,
उन महामानवों से चाँद मौन हो कर रहा है यह प्रार्थना,
क्योंकि अंधकार भरी कठिनाईयों में गरीब दुखियों का एक यही तो है अपना।

संपर्क सूत्र :
श्री पवन कुमार, ग्रा. शिवमहम्मदपुर, भा.गौरा, थाना-मढ़ौरा, जिला-छपरा (बिहार)
[मो. : 09576249201]

साथ आइए.....

ये वृक्ष और ये फूल तो ज़हर-ज़हर हो रहा
धरती के गीत हैं धरती का बहुत जल
जीवन को जो खिलाते खिल पायेंगे कैसे कहो
जीवन के मीत हैं जीवन के अब कमल?
इनकी सुरक्षा कीजिए अब फैक्ट्रियाँ नकली
औ इनका संवर्धन पानी बना रही हैं
इनसे ही सुरक्षित प्यास बुझाने की
धरती का जन-जीवन कहानी बना रही हैं
वृक्षों को काटने से जल-प्रदूषणों से
अब बचाइए जल को बचाइए
साथ आइए..... साथ आइए.....
कोमल हथेलियों पर शोरगुल ही शोरगुल
नफरत की आग है पड़ रहा सुनाई
आस्तीं में पल रहे फट रही दिशा-दिशा
विषैले नाग हैं हवा भी कँपकँपाई
इन्सान के अब हो गए तूफान और आँधी है
इन्सान ही दुश्मन मिट्टी के अब घरों में
बिक रहीं फुलवारियाँ इक चीख भर गयी है
बिक रहा चमन संगीत के स्वरों में
प्रदूषणों के कारकों को ध्वनि-प्रदूषणों को
अब मिटाइए अब तो हटाइए
साथ आइए..... साथ आइए.....
धूल, धुआँ, शोरगुल जहाँ-जहाँ भी रात है
पानी ज़हर-भरा दिनमान कीजिए
हम काट रहे जंगल कुछ तो उजालों का
जो है हरा-भरा सम्मान कीजिए
इक कंक्रीटी जंगल प्रकृति-संतुलन बहुत
बना रहे शहर में बिगड़ रहा है आज
बदल रहे हैं मानव को पर्यावरण-सुधार का
एक खंडहर में कुछ काम कीजिए
भविष्य अब क्या होगा? अपने आस-पास ज़रा
ये तो बताइए जगमगाइए
साथ आइए..... साथ आइए.....
फूल-सी सद्भावना अट रहा है धूल से
पत्थर का घर हुई ये आसमान आज
और मीठी-रागिनी बन रहे हैं जंगलात
चीखों का स्वर हुई रेगिस्तान आज
सत्य की संवेदना शोरगुल ही शोरगुल से
पत्ती-सी झर गयी फट रही दिशा
फूलों की डार-डार अब नहीं में ज़हर ही
शोलों से भर गयी ज़हर है बिछा
पर्यावरण की चेतनाएं पानी जो अपना जीवन
अब जगाइए उसको बचाइए
साथ आइए..... साथ आइए.....

संपर्क सूत्र :
श्री गुलाबचन्द वात्सल्य, विकास प्रिन्टर्स, बुधवारी, छिन्दवाड़ा 480 001 (म.प्र.)
[फो. : 07162-247734]